आज-कल मेहमान हैं सब मुफ़लिसी के साथ-साथ।
सिर्फ़ साये साथ हैं अब एक-दूजे के 'ज़हूर'
आदमी चलता नहीं है आदमी के साथ-साथ।

(नौ)

उलझा हुआ है आदमी दिन-रात काम से,
रिश्ते सलाम से, न रहे राम-राम से।
ऐसे सवाल आप भी हम से न पूछिये,
कब तक वो मुनसलिक रहा किस किस मक़ाम से?
चलिए करें ये मुद्दआ मिल कर तमाम आज,
किस को मिला है फ़ैज यहाँ इन्तिक़ाम से!
उसने बड़े ख़ुलूस से वादा किया था कल,
भूला नहीं है वो, कहीं उलझा है काम से।
बूढ़े शज़र ने साये तो बरसों दिये 'ज़हूर',
कोंपल को वास्ता नहीं कुछ अहतराम से।

(दस)

कभी कोई शजर होगा हमारा,
तभी हक़ शाख़ पर होगा हमारा।
इसी उम्मीद पर जाने दो उसको,
वो आयेगा अगर होगा हमारा।
अभी वो नफ़रतों की गोद में है,
किसी दिन टूट कर होगा हमारा।
करेंगे वो बयां रूदाद जिस दिन,
फ़साना मुख़्तसर होगा हमारा।
तलब है दौलते-दुनिया की जिसको,
वो कैसे मोतबर होगा हमारा।
इरादा ये ख़याले-ख़ाम है अब,
सहारा कल पिसर होगा हमारा।
हमेशा कौन रह पाया जहां में,
'ज़हूर' इक दिन सफ़र होगा हमारा।

शब्दार्थ : तसादुमः संघर्ष। तालिबः इच्छुक। मुनसलिकः संबद्ध। मोतवरः विश्वस्त। पिसरः पुत्र। ❖

संस्कृति समाचार

अभी तुम इश्क में हो का लोकार्पण

ललित कलाओं के प्रशिक्षण, प्रदर्शन एवं शोध की अग्रणी संस्था स्पंदन द्वारा पंकज सुबीर के बहुचर्चित ग़ज़ल संग्रह ''अभी तुम इश्क में हो'' पर विचार संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

स्पंदन की संयोजक वरिष्ठ कथाकार डॉ. उर्मिला शिरीष ने बताया कि संगोष्ठी की अध्यक्षता डॉ अंजनी कौल ने की जबकि मुख्य अतिथि के रूप में डॉ बिलकीस जहां उपस्थित थीं।

इस अवसर पर बोलते हुए पंकज सुबीर ने कहा कि भाषाओं के माध्यम से आपसी सौहार्द और परस्पर विश्वास को फिर से जीवित किए जाने कि आज के समय में सबसे बड़ी आवश्यकता है और इसके लिए काम किया जाना चाहिए। डॉक्टर अख्तर नोमान ने पुस्तक पर टिप्पणी करते हुए कहा कि यह ग़ज़लें उर्दू की रवायती शायरी और पारंपरिक ग़ज़लों की परंपरा को निभाती हुई गजलें हैं इनकी भाषा बहुत नाजुक और दिल को छूने वाली है। इकबाल मसूद ने कहा कि पंकज सुबीर मूलतः कहानीकार हैं लेकिन उनकी ग़ज़लों में भी वही भाव प्रवणता दिखाई देती देती है जो उनकी कहानियों में होती हैं उनकी गजलें उर्दू के छंद शास्त्र की रवायतों का पूरा पालन करती हैं। कार्यक्रम के दूसरे चरण में एक मुशायरे का भी आयोजन किया गया । कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ शायर एवं सुप्रसिद्ध रंगकर्मी श्री बद्र वास्ती ने किया। अंत में आभार स्पंदन की संयोजक डॉ उर्मिला ने किया उन्होंने कहा ने कहा कि यह दोनों भाषाओं के बीच एक सेतु बनाने का प्रयास है तथा इस सिलसिले को आगे भी जारी रखा जाएगा। इससे पूर्व सभी अतिथियों का स्वागत स्पंदन की ओर से डॉक्टर शिरीष शर्मा ने किया तथा उन्होंने सभी अतिथियों को एवं आमंत्रित शायरों को स्मृति चिन्ह प्रदान किए। इस अवसर पर बड़ी संख्या में प्रबुद्ध साहित्यकार सभागार में उपस्थित थे।

डॉ. उर्मिला शिरीष
संयोजक
स्पंदन